



INDIRA GANDHI NATIONAL OPEN UNIVERSITY

Assignment Submission for Term-End Exam June - 2024

ENROLLMENT NUMBER

: 2 2 5 4 7 0 3 0 8 2

NAME OF THE STUDENT

: NIKITA CHAUHAN

STUDENT ADDRESS

: Akbarpur Bahadarpur, Chhajubad, UP

PROGRAMME TITLE & CODE

: MHD : Master of Arts (Hindi)

COURSE TITLE

: Hindi Kavya - I

COURSE CODE

: MHD-01

REGIONAL CENTRE NAME & CODE:

: 07-Delhi 1 (Mohan Estate (South Delhi))

STUDY CENTRE NAME & CODE

: 0710 : Bestibandu College (710)

MOBILE NUMBER

: 7 3 0 3 8 2 2 4 1 2

E-MAIL ID

: nikita.chauhan7838@gmail.com

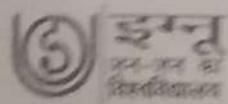
DATE OF SUBMISSION: 28 - 04 - 2024

(SIGNATURE OF THE STUDENT)

Nikita

एम.ए. हिंदी (एम.एच.डी.)
पाठ्यक्रम कोड : एमएचडी-01
हिंदी काव्य-1

सत्रीय कार्य (जूलाई-2023 और जनवरी-2024) सत्रों के लिए
जूलाई-2023 सत्र के लिए अंतिम तिथि : 31 नवंबर, 2024
जनवरी-2024 सत्र के लिए अंतिम तिथि : 30 जिलान्वर, 2024



मानविकी विद्यार्थी
द्वितीय गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
मैदान गढ़ी, नई दिल्ली-110068

एम.एच.डी.-01 : हिंदी काव्य-1
 (आदि काव्य, भक्ति काव्य एवं रीति काव्य)
 सत्रीय कार्य

पाठ्यक्रम कोड : एम.एच.डी.-01
 सत्रीय कार्य कोड : एम.एच.डी.-01/टी.ए.ए./2023-24

अंक

- | | | |
|-----|---|----|
| 1. | 'पृथ्वीराज रासो' की प्रामाणिकता पर अपने विचार व्यक्त कीजिए। | 10 |
| 2. | 'पृथ्वीराज रासो' में 'कनवज्ज समय' के षट्-ऋतु वर्णन के महत्त्व पर प्रकाश डालिए। | 10 |
| 3. | विद्यापति ने अपनी रचनाओं में तत्कालीन समाज का किस रूप में चित्रण किया है? उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए। | 10 |
| 4. | गीति काव्य के रूप में विद्यापति पदावली का विवेचन कीजिए। | 10 |
| 5. | कबीर की भाषा पर विस्तृत प्रकाश डालिए। | 10 |
| 6. | जायरसी के पदमावत की विशेषताओं का वर्णन कीजिए। | 10 |
| 7. | भक्ति आंदोलन में सूर के महत्त्व का विश्लेषण कीजिए। | 10 |
| 8. | "मीरा ने अपने काव्य में रुद्धिवादी विचारों का काफी विरोध किया है।" इस कथन पर सौदाहरण प्रकाश डालिए। | 10 |
| 9. | तुलसीदास ने 'कवितावली' में समकालीन समाज का वर्णन किस रूप में किया है? | 10 |
| 10. | निम्नलिखित पर टिप्पणी लिखिए : | |
| | (क) कबीर के ब्रह्म | 5 |
| | (ख) तुलसी साहित्य के मर्मस्पर्शी प्रसंग | 5 |



इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
मैदान गढ़ी, नई दिल्ली - 110068
Indira Gandhi National Open University
Maidan Garhi, New Delhi - 110068



IGNOU - Student Identity Card

Enrolment Number : 2254703082

RC Code : 07: DELHI 1 (MOHAN ESTATE (SOUTH DELHI))

Name of the Programme : MHD : MASTER OF ARTS (HINDI)

Name : NIKITA CHAUHAN

Father's Name : VEERPAL SINGH CHAUHAN

2254703082

HOUSE NO 186 GALI NO 2 , BUDH VIHAR
Address : AKBARPUR BAHARAMPUR
GHAZIABADGHAZIABAD UTTAR PRADESH

Pin Code : 201009

Instructions :

1. This card should be produced on demand at the Study Center, Examination Center or any other Establishment of IGNOU to use its facilities.
2. The facilities would be available only relating to the Programme/course for which the student is registered.
3. This ID Card is generated online. Students are advised to take a color print of this ID Card and get it laminated.
4. The student details can be cross checked with the QR Code at www.ignou.ac.in



Nikita

Registrar
Student Registration Division

एन.एच.डी.-०१ : हिन्दी काल्पना

(आर्टि काल्पना, अकेला काल्पना एवं रीति काल्पना)

① 'पूर्वीराज रासो' की प्रामाणिकता पर अपने विचार त्यक्त किए।
 'पूर्वीराज रासो' हिन्दी का प्रथम उल्लेख महाकाली माना गया है। यह
 एक ऐसी हजार पुस्तकों का बुद्ध आकार का ग्रंथ है, किन्तु इसकी
 प्रामाणिकता के संदर्भ में विवाद है। प्रत्युतः यह ग्रंथ प्रारंभ
 में अकालीन नहीं था। कर्त्ता एड ने इसकी वर्णन-शीली तथा
 काल्प-सौंदर्य पर भूल्ये होकर लगभग ३० हजार छवियों का
 झंगेजी में अनुकूल किया था। अब १८८५ ई. में डॉ वूलर ने 'पूर्वीराज
 विजय' ग्रंथ के लिये पर 'पूर्वीराज रासो' को अधाराणिक घोषित
 कर दिया। इस विवाद में विवादों के बारे कई हो गये।

एक वर्ग इन विवादों का है जो इसे प्रामाणिक मानते हैं तथा इसरा
 वर्ग इसे अधाराणिक मानते वालों का है। तीसरे वर्ग के विवाद
 इसे बदं की स्थिति नहीं मानते तथा इसका बारे वर्ग के विवादों
 ने बदं को तो प्रामाणिक माना है किन्तु पूर्वीराज रासो को
 अधाराणिक घोषित किया है। इनके भतीजे का अद्यतन हमें अन्त
 प्रकार कर सकते हैं—

१. कठिनपर्यंत विवाद को प्रामाणिक ग्रंथ मानकर उसका इसी समर्थन
 करते हैं। बदं लिये को भी पूर्वीराज रासो का समकालीन शिष्ट
 किया है। लिखावंश, भोदवलाले विठ्ठलाले पांड्या, डॉक्टर श्यामसुंदर
 दास आदि विवाद इसी वर्ग में आते हैं।

2. कुछ विद्यालैसे हीर्ष ग्रामाभिक मानते हुए ऐसे हासिक हैं जो इसका अधिकार करते हैं। इनका कथन है कि तो तो यद्यनाम को कोई कही दुआ तो ही उसने 'पूर्वीराज रासो' भवानीय की स्वता की। इन विद्यालैसे भैरवीश्वार्ण द्वितीय शुभल और्जा, और बुलर, मुर्ही देवी प्रसाद, ग्रामार्थ रामचंद्र चुम्ल आदि प्रमुख हैं। उनके तकि इस तकार हैः—
- (क) रासो में उल्लेखित धर्मार्थ के ताम्र इतिहास से भेल गहीं रहती।
- (ख) पूर्वीराज का दिल्ली जाना, संयोगिता स्वयंवर की धर्मार्थ भी कालिपत है।
- (ग) अंगारपाल, पूर्वीराज के वीसलेके के राजों के १०८ अशुद्ध व निश्चयार हैं।
- (घ) पूर्वीराज द्वारा उन्नेश्वर के राजा भीमसिंह का वर्ण भी इतिहास अभ्यन्तर नहीं है।
- (ज) रासो में दी गई तिथियाँ भी अशुद्ध हैं।
3. कुछ विद्यालैसे मानते हैं कि स्वयंवर के नवि आपृथक हैं। किन्तु उनके दाश एवं वस्त्रिक रासो उपलब्ध नहीं हैं। इन विद्यालैसों ने 'रासो' का आधिकार भाग भाग है।
4. इस वर्ष के विद्यालैस मानते हैं कि यद्यन ने जैली राज के दशमार में रहकर मुक्तक २५ में रासो की स्वता की थी। इनके भतातुसार 'रासो' प्रवंधकार्य नहीं था। यह गर्वोत्तमदास स्वामी का है। इसी प्रकार पूर्वीराज रासो को किसी अंश तक प्रामाणिक मानते वाले विद्यालैस के लाले ५२ विद्यार किया जा सकता है—
- (क) डॉ. दशरथ घर्मी का भत है कि इस अंश का शुल सक्षेपों में छिपा है तथा जो शुद्ध प्रति है उसमें इतिहास संवधी कोई असुद्ध नहीं है।

- (१२७) डॉ. हेलारी प्रसाद द्विवेदी ने 'पृथ्वीराज राजो' में अरद्धवीं शताब्दी की भाषा की संचुकाताकारमयी अनुस्वारात प्रवृत्ति देख गर इसे अंतर्वीं शताब्दी में विचित ग्रंथ स्वीकार किया है।
- (१२८) किनासे विद्वानों का ये भी विचार है कि 'राजो' इतिहास ग्रंथ ल शोकर कार्य - स्थल है, अतः इतिहासिक साक्षी के अभाव में इसे वितान अत्राभागिक घोषित वही किया जा सकता।
- (१२९) धन्द्वाओं में ७०-१०० वर्षों का अंतर संवत् की जिलता के कारण ही हुआ है। विश्वुभाल पांड्या दूश कल्पित 'आलंद संवत्' के अनुसार इस ग्रंथ की इतिहासिक तिथियाँ भी छुट्ट लिहि होती हैं।
- (१३०) डॉ. हेलारी प्रसाद द्विवेदी का भत है कि 'पृथ्वीराज राजो' शुक-शुकी संवाद के रूप में रखा गया था, अतः उन अंशों को ही प्रक्षिप्त आना जा सकता है। जिनमें ही शब्दी नहीं पाई जाती।
- (१३१) 'राजो' में अरवी - कार्ली के शब्दों का पाठा आना इसको अत्राभागिक लिहि नहीं करता। पस्तुतः वह भार्हार का विवासी था। उस समय भार्हार मुस्लिमों के अभाव में था आतः उनकी आधा ग्रे इस प्रजार के शब्दों का आना स्वाभाविक ही है। आपार्थ रामचंद्र शुल्ल ने इसकी शर्वता अत्राभागिक एवं इतिहास विश्व भाना था, किन्तु ही रथाभस्तुद्दृ द्वारा इतिहास संवंधी भ्रातिर्थों का विवारण नहीं है।
१. वह गवि ६१२ अपने शाकाभासाता राजा पृथ्वीराज की विद्वानों की आतिरिक्तों की विवारण नहीं है।

इस अंध के द्विपक भी इसे आपामानिक भौति नहीं करते। अतः
भौति गुणों में प्राकृति अंशों का पाठा जाना स्वामानिक है,
अत्यधा हमें 'रामपारितमानस' आदि महान् श्रेष्ठ आपामानिक भावा
होगा।

मिशनर्सों के अनुसार काल केवल इतिहास ही नहीं द्वितीय की
थह अंध काल → अंध जिसमें कल्पनाओं का समावेश होता
स्वामानिक ही है।

विषयः-

इस प्रकार रासों की मानानिकता के विषय में
अबैक मत उपं अबैक धारणाएँ हैं। आपार्थि रामचन्द्र ने इसे
सर्वथा आपामानिक धारित किया है, परंतु डॉ श्रीपुन्नार शर्मा
के किए अनुसार रासों सर्वथा आपामानिक नहीं हैं। उनका भत
है कि रासों का अधुतम संस्कारण गीलिका के बहुत लिंग
हैं ऐतिहासिकता में गल्पना का समर्वभ कर अपने कार्यों
शैपकता प्रदान करते हैं जही खादिर लाभ की गरिमा में
पूर्ण रूपों की भावसा भी उन्हें ऐतिहासिक आक्षयों जो
वृद्धजनों के लिए प्रेरित नहीं हैं। निर्दली का है जिसकी प्रामानिकता
उपं आपामानिकता के विषय में कठवा अधिन गद गया है।
साधारण पाठ्य के लिए यह धिनीय कठवा गठित है कि इसे
प्रामानिक भव्यते था जही। डॉ ह्यारी प्रसाद द्विवेदी ने लिखा है

"विरचक भंधन से दुस्तर फैवरार्थी तथार हुई है। उसे
पार करके अंध के आहियन इस तक पहुँचुना हिंदी के
विधार्थि के लिए असंभव से आपार हो गया है।"

'पूर्णीराज' राजों में 'कल्पनज्ञ समय' के पद-स्थिति वर्णन के अहंकर पद प्रकार्य दिलाई।

'पूर्णीराज' राजों में 'कल्पनज्ञ समय' का वर्णन आव्याधिक भवित्वे दर्शता है क्योंकि यह उस द्वारा के इतिहासिक संदर्भ और सांस्कृतिक भवित्वे में बहुमूल्य अंतर्दृष्टि प्रदान करता है। पूर्णीराज राजों, पद वर्षदर्श ६१२ वर्षित में गदाकार्य काविता है, जो का प्राचीन राजापूत राजा पूर्णीराज द्वारा के जीवन और उपलब्धियों का एक प्रौद्योगिक विवरण है।

पूर्णीराज राजों में, गदाकार्य का एक पात्र, शत्रु. कल्पनज्ञ समय का एक उपलंति और विस्तृत विवरण प्रदान करता है जो उस समय अवधि को संपर्कित करता है जिसमें पूर्णीराज द्वारा ने आमत लिया था। यह विवरण कई महत्वपूर्ण उद्देश्यों को पूरा करता है:

(क) ऐतिहासिक संदर्भः— गदाकार्य का वर्णन उस विशिष्ट जगत की जड़भजन प्रस्तुत करके इतिहासिक संदर्भ प्रस्तुत करता है जिसके द्वारा न पूर्णीराज राजों द्वे दिल्ली राज्यों पर शासन लिया था। यह गदाकार्य की घटनाओं और गार्यों की एक विशिष्ट इतिहासिक दृष्टि के जीतरु एवापित रूपों में अद्वितीय है, जिससे लाघ में प्रामाणिकता और विवरणीयता पुढ़ती है।

(ख) सांस्कृतिक भवित्वः— यह कानून कल्पनज्ञ के सांस्कृतिक एवं सामाजिक परिवेश पर प्रकार्य दिलाता है। यह उस द्वारा के द्वारा गोली के बरे में अंतर्दृष्टि प्रदान करता है। यह सांस्कृतिक संदर्भ पाठ्यों और शोत्रों जो पात्रों और उस समाज के लोकानाम् और श्री मानसिगतों जो समझने में

महद जर्ता है जिसमें के १६ते हो।

(३) प्रतीक्षाद और अन्यता :- हृषीराज राजो में कल्पन सभ्या का वर्णन अक्षसर समृद्ध प्रतीक्षाद और अन्यता जो उपयोग जर्ता है। आवामक आधा और खलनां एवं उपयोग जर्ता है। आवामक आधा और खलनां एवं उपयोग जो मनोरम और प्रियरैतेभज्ञ मालिन व्याहों में महद जर्ता है, जो दुर्लभी जो महाकाश की दुनिया में ले जाता है। यह कलामक प्रिया लोकों की आवामक और सांख्यिकी अपीलों जो जर्ता है।

(४) वीरामूर्ति आदर्शीकरण :- कल्पन काल का वर्णन, विशेष रूप से हृषीराज वीरामूर्ति के संबंध में वीरामूर्ति धर्म के आदर्शीकरण में योगान देता है। यह हृषीराज जो एक बदाकुर और गुरी शासन के राजे में प्रियत जर्ता है, जो उल्ली बदाकुरी, गिरहों और व्याघ्र फ़्लामिंगों के प्रति अद्वितीय अतिथिता पर जोर देता है। गोरक्षाली कल्पने काल जो प्रियं वृषीराज जी वीरा को कैंचा उठाने और उसके पासे भार लेने वीरामूर्ति आदर्शीकरण इन्होंने जो लाभ जर्ता है।

(५) सांख्यिक निरंतरता :- कल्पन जात जो वर्णन सामृद्धत सांख्यिक और मार्गित उपराओं की निरंतरता पर जी प्रकार डालता है। यह सामृद्धत योद्धा शुल्क से जुड़ी जर्ता और सम्मान, उल्ली आवार शहित और अपने राजा और राज्य के प्रति उनकी अद्वितीय व्यापारी पर जोर देता है। यह प्रियं सामृद्धत समुदाय की सांख्यिक पहचान और गोरक्ष जो पुष्ट जर्ता है।

कुल जिलाकर्ता, पृथ्वीराज रासो में जन्म समय के बारे में शास्त्री के वर्णन ना महत्व इतिहासिक संदर्भ प्रवान नहीं। सांस्कृतिक महत्व जी उआगरे नहीं, उपर्युक्त कल्पना कराने। वीर धर्म को आदर्श बताते और सांस्कृतिक निरन्तरता जो मजबूत नहीं जी कामता में निहित है। यह महाकाव्य में गढ़राई, प्रामाणिकता और कलाभक्त मूल्य खोड़ता है, इसकी स्थायी लोकप्रियता और सांस्कृतिक महत्व में सांगान देता है।

पृथ्वीराज रासो, पृथ्वीराज चालन के जीवन चरित्र और तत्कालीन प्रवालि एवं परिवर्षीयों को परिलक्षित करती है आदिल द्वितीय जी अर्वाकृष्ण महाकाव्याभक्त रूपना है। इसकी स्थाना पृथ्वीराज चालन के जित्र और राजनीति वंदेवरसाई द्वारा जी गई है। पृथ्वीराज रासो इस विचालन काव्य है, इसमें ७२५५ और ८४ प्राचीर के दंडों ना प्रयोग किया गया है। वंदेवरसाई ने इसमें चुम्ब और वीर धर्म जी उभग ना अर्थात् ओर्पुर्ण एवं भविष्यपूर्ण वर्णन किया गया है। यह ग्रन्थ अपने विस्तृत कलेवर में इतिहासिक, सामाजिक, पौराणिक एवं लाल्पनिक हीरों को समाविष्ट किया हुआ है।

कालवधु समय ना वर्णन उस विशिष्ट काल जी क्षेत्र और इतिहासिक संदर्भ को प्रस्तुत करता है, जिसके द्वारा न पृथ्वीराज चालन ने दिल्ली राज्य पर शासन किया था। यह महाकाव्य धर्मात्मा और कार्यों को इस विशिष्ट इतिहासिक दृष्टि के भीतर स्थापित करने में अद्द जैता है। इसमें सांस्कृतिक एवं सामाजिक परिवेश पर प्राचीर इत्याला गया है तथा उस चुग के द्वारा प्रवालि शीति-रिवाजों, पंखपराओं, मूल्यों एवं जीवन की शास्त्री के बारे में आंटुलिये प्रवान जी गई है।

'कनवज्ज समय' के ५८-८९ वर्षों ला महत् पूर्वीराज रासो
ला एक नेतृत्वपूर्ण डिंग है। कनवज्ज समय | जब पूर्वीराज
स्थापित ला संयोगिता के अनुरक्त आवे छत्यों हैं। तो १९
अपने जिग व जवि वंशरदाई जो आध लेख लग्नांभ जाने
को तर्पर होता है। पूर्वीराज जब १३-१५ वर्षों अपनी
रातियों से लग्नांभ जाने की आशा मिलता है तो प्रथेन
रानी उसे ला नहु भर रोक लेती है। इसी परिस्थिति जो ध्यान
में रखते हुए जवि ने ५८-८९ वर्षों लिखा है।

पूर्वीराज जबसे पहली की रानी शाक्ति के पास आते हैं।
शाक्ति ज्ञा उत्तर दे, उत्तर और प्राण दोनों लंग में एक साथ
आ गा — "प्राण ज्वाब दोनों वले आन अटपक्के लंग"
८९ वर्षों की थी। की रानी शाक्ति ने लह-आम जी मंजरी
आ गई है, लद्दव कुले हैं, राते दीर्घ हैं। अमर मकरदं पन में
मूर लेख देवर-उधर गुजार रहे हैं। लोलिल झुँझ-झुँझ
बोलकर रति की आग लग रही है। है नाथ! परो पहली हुई
विलती आती है। कनवज्ज समय में भनेत मार्जिक प्रसंग आप ही
कनवज्ज समय में वर्णित धरोहर नहु वर्ण देवी साहित्य की
अमृत्यु धरोहर है। जवि ने उस चुग जी समुद्र नगरी कान्य
कुण्ड उनकी उपात राजते देखने जायत है। शाला जयचंद
ने दखार में वंशरदाई के साथ धर्मवेश में पूर्वीराज
के जाने की धना जी नालीयता से अस्फूर है। १६वें
उपरात गंगा के किनारे संयोगिता और पूर्वीराज ला जिल्ल
अमृत है। महाकवि वंशरदाई ने अपनी जामना जानीत
और मनवशामिल स्थितियों के विचार से इस प्रकार जो
अमृत बना दिया है।

(3) विधापति ने अपनी स्पनाओं में तत्कालीन समाज का ऐसा रूप गेंथन किया है उदाहरण देकर + पर्याप्त कीजिए।
 महाकवि विधापति आंदिकाले के सुप्रशिद्ध कवि है। वे हिन्दी साहित्य के इस रोराहे पर आसलतरत हैं, जहाँ से साहित्य के विभिन्न पर्याप्त शिरों हैं, जहाँ से साहित्य के विभिन्न पर्याप्त निष्ठा हैं। विधापति अपनी गाथा-रूपी और विषय वस्तु की मधुरता एवं सुकुभारता के कारण अत्यंत प्रासिद्ध हुए। अपनी इही गोमतकांत पदावली के कारण वे भविन नोकिल के नाम से पुकारे जाते हैं। आकृति और क्षुगारु पर्याप्त पद लिखने के साथ साथ विधापति ने तत्कालीन समाज पर भी विद्वग्न दृष्टि डाली है।

विधापति की स्पनाओं गें तत्कालीन समाज का चितारा —

महाकवि विधापति की स्पनाओं में —
 उनका युग प्रतिवित होता है। वे संक्रमण काल के लावे हैं। उनकी स्पनाओं में इसना स्पष्ट प्रभाव परिवर्धित होता है। संक्रमण काल के लावे होने के बाते विधापति के गाय में अपसान और उक्ति होती है। प्रवृत्तियों का अद्भुत संग्रह दृष्टिगोपर होता है। लविवर विधापति ने अपने गाय में तत्कालीन तिरुहृत समाज के राजनीतिक आविरता और सामाजिक प्रतिकूलता की स्थिति का स्पष्ट और स्फूर्ति भिन्न लिया है। वे लिखते हैं —

“अनासर रस बुज्जि निलार नहि कवि कुल भगि
 शिरोवरि भक्ति।”

तिरुहृति तिरोहि रखे गुणे रा गरेश जबे सुग गउँ।”

विधापति की सुप्रशिद्ध स्पना लीर्तिलता से अतिरिक्त अनुभावित पाल्मोरी तत्कालीन सामाजिक स्वरूप को प्रत्युत लाती है।

विधापति कहते हैं कि २०८ वीं साल के त १६वें और आस्था तथा अधिकार के व्याप्त हो जाते से समाज पर प्रतिकूल असर पड़ता है और उसी दालत बदल दी जाती है। इस प्रकार तिन्हुन के तकालीब समाज में दुर्विधाएँ और अधिकार के कलने से दालत बदल दी जाती है।

“ठाकुर ठक्क भए गेल पोइ सरपाई धर आजिअ दासे।

गोसाडिं गाहिअ धधम गह वंद्य निमाजिआ॥

२वले सज्जन परिभवित कोइ नहि दीई विवरक।

जाति अजाति विवाह अधम डाम को पारक॥”

विधापति की व्यवाखो में तकालीब सांस्कृति समाज का चीवं स्वरूप सामने आता है। की-की और कौंकी-कौंकी अद्वालिकाओं के वर्णन से व्याख्या राजसमाज से जुड़े की का बोल होता है। लाजार की जीड़ का छातिलता में रोचक वर्णन है। नगर के समाज में श्राद्धमा, कायस्य, राजपूत और अनेक जातियाँ वसी थीं। वहाँ वेश्याएँ भी थीं और की सरपाई में गुलाम भी थे जो विक्री के लिए तथा रहते थे। दासियाँ और नौकर-पाले भी लहुतरे थे। राज्य से जुड़े लोगों में विलासिता व्याप्त थी और घनता में दरिद्रता। गरीबों और किसानों की दालत बदल दी थी। समाज में झुद्रवीर महाजन थे।

विधापति तकालीब समाज का चिना गरते हुए कहते हैं कि हिंदू मुसलमान एक साथ रहते थे। धर्मों की शार्य ली शुभिलोकी दृष्टि से भेदभाव थे। इसके बाबूद “कही बांग दी खा रही है, कही वेद पाठ हो रहा है। कहीं विस्मिल्लाह है, कहीं बली है, कहीं ओशा है, कहीं रवोजा है। कहीं नग्ल है,

कही रोखा है। कहीं ताम्रपत्र है और कहीं ”

विधापति की शुंगारिका और भाजी परवर स्वतन्त्री तथा प्राचीनता
वर्णन में जी सामाजिक वेतना स्थिर रूप से दृष्टिगोचर होती है।

विधापति सामाजिक परिवेश को लाते हुए नहत है कि इस
समय व्यवसाय नारी विकासित था विपद्धति में भी लगती थी।
पूर्वी मंडल की समस्त वस्तुओं विकले आती है। व्यापारी ज्ञान
में अपनी साझी बोजे वेच लेते हैं और जो रवरीदना होता है,
रवरीद लेते हैं। विधा और ज्ञान की शुरू होने के अवधुद
जिविला में जी वह ही सामाजिक प्रतिष्ठा का मुख्य आवारण।

विधापति शुगान समाज का विआजित था। राजा और सामत
प्रभुरव में थे। व्यापारी और मध्याहन भी शुश्वी-संपन्न थे।
किसान, मजदूर और वास गोषित के रूप में। विधमता और
अंतरिक्ष को थह मुख्य सप समाज में विधमान था। इसी आदिकालीन
सामाजिक परिस्थितियों और प्रवृत्तियों के विधापति को प्रेरित और
प्रभावित किया। इसको वे अपने साहित्य में विचार नहत है। अधिपि
विधापति दूरबरी लाये अपने वेतना पर तपारी के अपने घारों तक
के परिवेश के प्रति धूर्य रूप से जागरूक हो।

समयतः उह सकते हैं कि आदिकालीन महाकावि विधापति की
स्वतन्त्री में उनका दुर्ग परिभक्षित होता है। अपनी स्वतन्त्री में
उह और उहाँ सामाजिक रूप से संपन्न राज परिवार के
साथ सांभत, मध्याहन और व्यापारी का का वर्णन किया है
तो इसी और विपन्न, वमन और शोधन के शिकार वास,
किसान और मजदूर का की परिस्थितियों जो जी विचार किया
हैं कुल जिवान उह सकते हैं अधिकांशतः शुगार और भाजी
के खाले जो स्वने वाले विधापति हो अपनी स्वतन्त्री में

तकालीन समाज की परिस्थितियों और प्रवृत्तियों का अधिक २१८ में चित्रण किया है। विधापति की शुश्राब्दि स्वना की तिलता, कार्तिपताका और लिखनावली तकालीन समय के समाज और भवजीवन के अनेक अधार्य और अजीव चित्र प्रस्तुत रखती है। ३०६ों संस्कृत, अष्टद्वयी एवं मंगली भाषाओं में स्पनाहं जी वे मूलतः शृंगार-२८ के लिए थे एवं इन्हें-राष्ट्र के प्रेम जा ३०६ों संस्कृत वर्णन किया है।

उन्होंने भाली-२८ में इबी स्पनाहं जी जी है, अर्थात् भिष-पार्वती के संबंध में।

उनकी लिखे पद आज भी लिपिला की संस्कृति के आभिन्न और के २१८ में गाये एवं पसंद किये जाते हैं।

विधापति लालू, स्मृति, नीति, शृंगार, इतिहास आदि के शास्त्र और रसायिता थे। उनके सभी ग्रन्थों के अध्ययन से ही तकालीन समाजिक-सांस्कृतिक इतिहास पता-चलता है। लिपिला और लंगाल-असम के बीच उस समय व्याप्ति था और लिपिला विश्वविधालय में लाहौर से कान्ती लाग पड़ने आते थे।

१९८५ विधापति भी एक प्रमुख भिक्षालयों विधापति अपने जीवनकाल में ही अद्यार्थिक रह्याति प्राप्त कर चुके थे। जॉनपुर से असम तक उनकी कविता जो प्रभाव था और उत्तर में नेपाल भी इससे अद्भुत नहीं १९८५। चूंकि लिपिला उस समय एवंतर्म १९८५-१९८६ था व्याप्ति के प्रव्याप्ति के दौरान ही जो १९८० ६८-६९ के लिए यहाँ व्याप्ति पड़ने आते थे। लौटने के समय वे भोग, विधापति और अव्यय कवियों को गीत साथ ले जाते थे। समाजिक जीवन दोनों पक्षों पर (लीलिंग और अद्यार्थिक) ३०६ों उत्तर उत्तर रहा है।

(4)

गीति काव्य के रूप में विधापति पदावली का विवेचन

कीजिए।

गीतिकाव्य के साथ आगे जाते वाला दृष्टव्य गीतिकाव्य कहलाता है। गीति काव्य को १८२०वाचित रखते हुए अंग्रेज पांडे लिखते हैं— 'गीति काव्य के आवेदनमय भव्यात्मक अहं प्रकाशन है। आपनाओं की तीर्त आभानुभूति गीतिकाव्य का प्राण है। और लव्यात्मक विश्वाल असिध्यात्मि उसका आधिक वास्तु गीति काव्य के कवि के व्यक्तिगति और लोकप्रिय का एकाग्रत्व दोनों भूमिका है।' गीतिकाव्य की विश्वालिसित प्रमुख विशेषताएँ परिलक्षित होती हैं— मुकाब्ले वद, गेयता, आपना गीति वाला आपित्यात्मि तथा धना प्रवाह जी तरा।

भैषिल कौकिल के नाम से विश्वृष्टि महाकावि विधापति हिन्दी में और २०१८में भैषिली साहित्य में गीतिकाव्य परंपरा की प्रबन्धन के रूप में प्रतिष्ठित है। लीलागान की जी परंपरा लोकमानस से औजुद जी, उस जनमानस और जन आपना जी सरल, अहं और अविरत असिध्यि विधापति के साहित्य में हुई है। उनकी आपवली में प्रेम जी है और अलौति जी है; क्षणार जी है और अह्यामिका जी। विधापति जी कालजयी जी विधापति पदावली जी आमरसूंदर जी एवं केवल भिषिलांचल १२८ संपूर्ण उत्तर आश्त जो अशीशूत किया है। पदावली लव्यात्मक व रागात्मक संगीत जी छाक्षली और आभानुभूति जी रागात्मक संगीत जी १०५वली और आभानुभूति जी तपोरथली हैं।

विधापति रचित पदावली का प्रथेक गाहद इस बत जा भक्षी है कि आधा पूर्व कवि जा खूफ आविलार्ह है। इसके जी भव्यरिगा पूर्व कवि जा विशेष द्यान १६ है। महाकावि जी पदावली

में अक्षर एवं वार प्रवाहित हुई हासिगोनर होती है। विद्यापति ने गीतिकाल्य के अप में पदावली जी स्थाना मुकातल शब्दों में सामजिक ली। इसमें भार्या भाव अपने आप में पूर्ण और स्वतंत्र है। विद्यापति रचित पदावली शब्द गीतिकाल्य हैं जिनमें भार्या जी लघातक गति के आध आध साथ और संगीत का अवृत्त सामजस्थ है।

विद्यापति रचित पदावली में भवुध्य मुख्य ११५ से तीन घण्टा के ५८ भिलते हैं।

(क) शादा-ज्ञान के प्रेम से संबंधित ५८ :-

पदावली में शादा-ज्ञान के प्रेम के बहुत से किंचित् विवित हैं। इस ५८ लोडि संशार नहीं किया जा सकता है कि स्थाना जा मूल दृष्टि ही यह है कि यदि जीवन भर भी प्रेम किया जाए तो जी लभ है जनन अवधि धम २१५ विद्यारत। लयन व तिरपत मेल।

(११) ईश्वरीय स्तुति से संबंधित ५८ :-

थाधपि विद्यापति मूलराप से शेष ये त्र्यापि उन्हीं व्यापक भवानित हुस्ति को प्रस्तुत नहीं है। इन जी स्तुति करते हुए के नदि हैं।

“जय-जय गंगा जय विष्णुरि

जय अद्य पुरुष जय जय भव नारी ॥॥

(१२) श्री-रघु से संबंधित ५८ :-

(१) लोक जीवन से संबंधित ५८

विद्यापति के असंख्य गीत लोककंठ में बस गए हैं तथा इनमें यह लाल्य लोकसंस्कृति से गहरे ११५ से जुड़ दुआ हैं।

इनमें भवानीवन की सामाजिक सत्याई क्रस्तकृति तुर्हि है। महाराजा विधापति द्वारा लोक भाषा में रचित पदावली उनकी जनसरीगार, जनरेतला, भावतात्मक उल्लेख और अनुभूति की छंडमता जो परिप्रय सही शब्दों में देता है। ऐनेजर पाठे गहत है — “गठिनाथ में बाल्यानुभूति के साथ गीतार्थ की तदमध्यता के अनुरूप ही पाठीय तदमध्यता संभव होती है। गठिनाथ वैयाकीज्ञ अनुभूति की व्यंजना है, जिन्हें उसमें लोक दृश्य जो स्पन्दन भी होता है। यही लाइन है कि वैद्यालीमक गीत समूदायीत बन जाते हैं”

(ii) आश्रयदाता राजाओं जी प्रश्नास्त्रि से संवादित पद-

महाराजा विधापति जी मुख्यतः प्राचीनि पदावली की स्पन्दन के लाइन हैं। उनकी पदावली में यहूं तो राजस्तुतिपरम पद भी लिलत है लिन्हुं इसमें मुख्य रूप से भास्ति और कृत्यार्थ जो समवय लिलता है। उनकी पदावली में यदापि वीर, भास्ति, रूढ़ि, अद्भुत आदि रूपों जो शुद्ध अमावेश हुआ है। परंतु इसमें प्रव्यान् रूप कृत्यार्थ ही है।

“सार्यि है मृद्धधि अनुभव मोय। जोई पिरीत अनुराग वर्णानदते तिलो-तिले दूतन हीय।” शिवप्रसाद रिह गहत है कि—

“सीदर्थि उनका पश्चाति है, सोदर्थि उनकी हृषि।

इस सोदर्थि लों उन्होंने लाला रूपों में देखा था, इसे कुशल मणिकरु नी तरह उन्होंने चुना, सभाया, स्वीकार और आलोकित किया था। सीदर्थि मन लो लित्ता भाव विहूल और एकीमुख कर देता है, इसे विधापति जानते थे।”

सार्वत्र के रूप में गहत है कि महाराजा विधापति जी सुमालिष्ट स्पन्दन पदावली गर्भ फौं में रचित है तथा उसमें गीतिनाथ जी सभी मुख्य विशेषताएँ — संगीतावधारा, वैयक्तिकता, कोभालकांत, भव्युरु पदावली, अलकारिता विधान हैं।

विधापति पदावली संपूर्ण रूप से एक जीवन जीने ला असरह
देती है। भाषा प्रयोग तो मानो प्रयोग तो मानो इनके बहु पर
प्राणवान हो उठता है, उन्हें विचित्र लगता है कि वही
बोल उठती है। साहित्य में ऐसे की जिस संरिता की अवधि
आपको नहीं है, अदानवि विधापति की पदावली इस संरिता
का उत्कृष्ट दृष्टिकोण है। जहाँ संगीत की एवर लहरी आपकी
पूरी जाद शान्ति के साथ रहती, आर्थि, आदि, विचारों और
जोक धर्मार्थों के सारे विक्रों के बहाँ जा रही है, उनमें
शांत और समुज्ज्वल रूप में....। कोई अंगांति नहीं, कोई
अभद्रता नहीं, कोई उत्कृंरवलता नहीं। इस साहित्य वर्त में
यमुना की व्यीरता, गंगा की निरुद्धलता और सरसवी की
पवित्रता हर तरह से विद्यमान है इनकी पदावली जो पदकर
उठने वाले हर पाठक जो विधापति के शब्दों में अहन पड़ेगा—
“अहं सुरवभारं पाओल तुम नहै।”

विधापति ने गीतिकाव्य के रूप में पदावली की रूपांतर
मुकालक शैली में सफलाधूर्वकी की। इसमें आठ आपकी
आप में पूर्ण और एवंतन है। गीतिकाव्य में आवनाओं की
आग्नीहत की प्रमुखता होती है। विधापति पदावली में राधाराम
के व्याप्तिगत प्रेम जा सूक्ष्म अंक दुआ हैं। पदावली की अंक
गीतिकाव्य है। इनमें आपों की ज्यामक गति के साथ साथ
काव्य और संगीत जा अनुरूप सार्वजनिक है। उनके असरंग
गीत लीकर्कंठ से बस गए हैं। उनमें यह गाय लीज असंहनति
से गहरे रूप से झुड़ा दुआ है। इसमें जन-जीवन की
सामाज्य प्रस्फुटित हुई है।

(5) ललीर जी आधा पर विस्तृत मानांग डालिए।

ललीर शुल्कतः भगते थे। हिन्दी साहित्य के इतिहास में गवर्नरश

जितने लोकप्रिय हैं। आधा प्रयोग के कारण उनके ही विवादास्पद

जी। उनकी आधा प्रयोगों के समस्त्य में विभिन्न विद्वानों के

अलग अलग मत हैं। ऐसे ललीर ने अपनी आधा के समस्त्य

में लिखा है—

इस पूर्व के पूर्णिया खात न पूर्छ कोय।

दमको तो सोई लख्ये धुर पूर्व का हीय॥

'बीजक' की इस सारणी के आधार पर नहीं विद्वानों ने ललीर जी

आधा को 'पूर्वी' नहीं ही

आधार्य रामचन्द्र चुल्ला के अनुसार "बीजक" की आधा संघुक्तकी,

अर्थात् राजस्थानी - पंजाबी लिखी रही लली है, पर २८नी और

भवद में गाँव के पद हैं। जिनमें काथे जी ब्रजभाषा और नहीं-

कहीं पूर्वी लोली ना भी व्यष्टित है।

श्यामसुल्तन दास के अनुसार 'ललीर' जी आधा ना निर्णय

करना देती रही है, क्योंकि वह रिक्तियाँ हैं... ललीर में

केवल शाहद ही नहीं, क्रियापद, नाम चिह्नादि भी नहीं आधाओं

के निभत हैं, क्रिया पदों के स्वप्न आवेनात् ब्रजभाषा और

रही लोली ने हैं। कारन विनोहि में कै, सन, सर आदि

अवधी के हैं, को ब्रज ना है और वे राजस्थानी ना।

इस पंचमेल रिक्तियाँ का कारण यह है कि उन्होंने ६१-६२ के

साथु भली ना सत्संग किया था, जिससे ऐवामाविक्त ही उन पर

मिशन शिव भानी जी लिखियों ना प्रभाव पड़ा और पड़ता

ही था यह है।

रामकुमार वर्मा के अनुसार, "गवीर के लाल ना बोला
पूर्ण हिंदी रूप ही लिख हुआ है। उसकी स्थान-स्थान ५५
पंजाबी प्रभाव छापशब्द द्वारा गत लीटा है।
बाबूचांग राष्ट्रसेना तक ही गवीर का अपना भूत जीवि आता है।

अर्चुलि विचारी से यह बात स्पष्ट है कि गवीर के यहाँ नहीं
आधारों ना मिल है। ६५० लिख उसकी स्वनाओं से ज्ञाना और
व्याकरण ना। विभिन्न और १५५० रूप वही लिलता। गवीर की
ज्ञाना पर विचार करते समय लगातार स्थान स्थिर होता कि
उन्होंने लिखे, ५८ इत्यादि लिखे वही नहीं हैं जो व्युत्पत्तित विषय
है, कि गवीर उत्तर भारत में एवं स्थान से इसके स्थान
पर धूमते रहते थे। स्थानवतः? इसलिङ् उन्होंने प्रादेशिक
वालियों के शब्दों ना प्रयोग अपनी कविता में किया है। उनके
कहे गए और सारकियाँ नहीं पढ़ियो तो ज्ञानविज्ञ २५ में ही रहे।
अतः उनके मूल रूप में परिवर्तन की समझावना से भी
इसका बही किया जाना चाहिए। जब अकां अलग प्रदेशों में उनकी
स्वनाओं नो लिपिवद्ध किया गया होता तब प्रदेश विशेष २५ ना
प्रभाव जी ज्ञान ५५ अपने आया होगा, परिणामस्वरूप भाज
हमारे सामने गवीर की लिलता के जो पाठ उपलब्ध है, उनमें
आधा के विभिन्न रूप द्वितीय पड़ते हैं। ६५० के साथ ही
"लगागङ् १००० ई. के अंधकार के विभिन्न २० पों से अनुवान
आरतीय ज्ञानों ना विनास प्रारंभ हुआ तथा लगागङ् १५००
ई. तक उन ज्ञानों ना १५५० रूप हुआ।

अतः इन पाँच सौ वर्षों के बीच जितने जी जी हुआ है,
उनकी ज्ञाना सालियोंलीन है। विभिन्न व्याकरण प्रदातियों
के बीच उसकी ज्ञानों जी इसी से ज्ञानिल है।

शहद भाऊर की दृष्टि से अधीर की भाषा में अपवधि, ब्रह्म,
रवड़ी लोली, राजस्वानी, पंजाबी आदि के शहद और उप विभिन्न
हैं। इसके अतिरिक्त अधीर पर नाथ ५८५ ना प्रभाव भी
है, उस समय अपमंगल भाषा अपने आलेहा स्वरूप में थी।
अतः अपमंगल के शहद भी अधीर की कविता में देखने की
मिलत है। अधीर ने ससुन्त को 'शूपलल', जहाँ है लोली-
इसके बावजूद तबसम शहद उनके नाय में मिल जाते हैं।
१६५४वाद और दर्शन से खुदी पदावली में तबसम शहदों ना समावेश
है। तत्कालीन समय में मुगल शासन के अवलोकित दर्शाएँ नी
भाषा कारसी भी और इस्लामी भी भाषा अख्ति। अतः इन
भाषाओं के शहदों का समावेश भी उनके साहित्य में हुआ।
अधीर जब व्यंग में व्याप्त ५१२७०८० पर अंतर्काश गत
है तो उनकी भाषा में अख्ति - कारसी शब्दों ना प्रयोग होता है।
और जब के १६६२ व्यंग की शृणिवादिता जी पील खोलते हैं
तो तबसम शहदों का प्रयोग नहीं है। इसके अतिरिक्त विजिव
देशज शहदों ना प्रयोग जैत है। इसके अतिरिक्त उनकी
स्पनाशी में भी देशज शहदों ना प्रयोग मिलता है। अतः
ठलकी कविता में खुलाही, बुनारी, वस्तारी, दाट-बाजार, खती-
किसानी आदि क्षेत्रों में प्रचुरम शहद भी मिलते हैं।

अधीर द्वारा प्रचुरम विभिन्न भाषाओं के शहदः-

— x — x — x —

१७३ लोली

भारी कहुँ तो महुँ डँके, दलता कहुँ तो झूठ।
मैं ना जानो राम को, बैलों कम्हुँ न लीठ॥

३६

जीर्ण तुम्हसों लोल्यां वाठी नहीं आते।
 हम भरकीन सुदाई नहें, तुम्हारा जरा गति आए॥
 अल्लाह अपनी दी ता खाहिव, आरे नहीं कुरमामा।
 भुशसिद पर तुम्हारे हैं जो, कहीं कहीं नहीं आया॥

अरवी - ५११२

दृष्टिकरत १९८८ द्वारा सभी में रुक्ति सुभाँ विसियार।
 दृष्टिकी आसमाँत रवानिक शुल्क मुरागिल कार॥

११४४

साथ सांगत अिणी कङ्कु विलार।

श्रेष्ठ

धर जाओ

जाखपुरी

जालहैं तबि धुनी पार ला पावल।

वस्तुतः कवीर के अपनी इच्छाओं में शब्दों ना प्रयोग भाव, विचार, विषय और व्याख्या के अनुसर किया है। कवीर की भाषा को विद्वानों ने 'अध्युक्तार्थी' वाले भी दिया है। कवीर का लक्ष्य कविता करना नहीं, सांसारिक लोगों का जीवन का मत्ती समझाने के लिए सहज भाव से अपने आवों भी आविष्यानी लगा चा।

जामशी के पदभावत की प्रियधत्ताओं का वर्णन किए।

सूक्ष्मिकार्थ धरा के प्रतिबिधि कवि ने समाजवादी चेतना को प्रवेश आलिक मोहनभद्र जामशी भालौतिकालीन हिंदी साहित्य के प्रेमगार्ही विशुण जायवारा के अधिकार काहि भाव भावत है। इनकी यार रघुनाथ प्रसिद्ध है। — अखरपत, आँखी कलाम, कलापत और पदभावत। उनकी शुप्रसिद्ध महाकामालमक छाति पदभावत उनके यह गा आयार है। दैहल-कापाई में विशुद्ध अह प्रवंधन कार्य प्रेम गा पीर की भेखला जरता है। इस रूप में यह मनुष्य जीवन को ही बंकुठी बनाने गा आक्षत जरता है। "मानुस प्रेम भए बंकुठी। नहि ते काह व्हार एक गुणी।"

आयार रामचंद्र चुक्कल ने 'जामशी प्रत्यावर्ती जी शुभिजा मै पदभावत के मध्यकार्यवे पर विवार जरत हुए लिखा है। — "प्रबन्ध कोक के जीतर दो भर्वश्चेष्ट कार्य है। — रामचारितमहस और पदभावत — हिंदी साहित्य का जगभगाता है।" इसी प्राप्त शुप्रसिद्ध साहित्यकार डॉ. शशभूताध लिंग है। लिखा है — "पदभावत अजंकृत यह साहित्यिक महाकाव्य है अपार्ट उसकी रघुना एक विशेष कवि द्वारा परम्परा प्राप्त साहित्यिक शैली के हुई है।"

जामशी के पदभावत की प्रियधत्ताओं

डॉ. श्रीवस्त्राय पाठ्यक ने इस प्रबन्ध कार्य की विशेषताएँ लिखा है। — "पदभावत में प्रेम, क्षमा, वैराग्य, क्षीक, करुणा, भय आदि स्थायीभावों की गवाहीर अभिव्यक्ति हुई है। विशेषपूर्व भनेदशाओं की मार्जिक अभिव्यक्ति और कथा आनुभूतियों की संवाई ज्या आकृत्यात्मि की मर्मस्पृष्टि और प्रभुविष्टता क्या प्रेम प्लावित भाव, क्या

परमसत्ता के दर्शन के ले व्याकुलता और ज्ञा तद्यज्ञ
प्राणवानी, सार्वज्ञ अनुभूति, तथा प्रियतम के दर्शन क्षयादि वे
'पदमावत' में गुरुता, गुरुभीरता और महाकाल्य के अनुभूत
महता जी प्राण धृतिएं जी हैं।

① भावगत प्रियधर्मः:-

(i) सूक्षी दर्शन या तस्त्वुक जा अव्यारु

ज्ञायसी है पदमावत में इत्तम लो पारपरिज्ञ व्यरुता में
संशोधन लक्ष्यत हुए तस्त्वुक दर्शन को मान्यता दी। इसके
अंतर्गत कवि परमात्मा जो प्रेसिला एवं वंदे जो प्रेमी जो २१४
में पारपरि लक्ष्यत है। ये शकमजीजी से इकाइजी लो जी
थारा में यज्ञीन २२७त हैं।

(ii) प्रेम जी मूल्य जे रूप में स्वापना

पदमावत में मानवीय प्रेम जो जीवन जा आवारभूत मूल्य
के रूप में प्रतिस्थापित किया है। इसके अद्यामे जो सार मनव
प्रेम है। यहाँ प्रेम साहचर्य है, १६ ते मंदज सावन है।

(iii) गुरु की प्रतिष्ठा जा प्रतिवादन

पदमावत महाकाल्य में डाक्टर ईश्वर जी खाति में रुत सावन
की उक्ती भाऊल तज पहुँचाने के लिए गुरु के २०८ में
दीर्घामन तीता जो प्रतिष्ठित लिया गया है।

(iv) लोककथाओं जा प्रतिलामन विचार

ज्ञायसी है अपने शिष्यों जो प्रवार जैसे हेतु हिं समाज
में प्रचलित लोक कथाओं जो अपने जात्यों जा आवारभावा

आंदोलन में शूरपास का महत्वः -

शूरपास ने साहित्यिक संकलनाओं के माध्यम से आंदोलन वो आधारपूर्व जगता के अमृक पहुँचाने का भारक ए समाप्ति प्रयत्न किया। अनेक पाइ ने "आंदोलन और शूरपास का कार्य" बारक दुलक में शूरपास की सुसंगठित और अवास्थित एवं स्थापित किया। इसी प्रभाव का भद्रकारी शूरपास ने पोषित शूरपास परिष्कृत रूप बन-बन तक पहुँचा दिया।

(i) भासिकान्न : स्वर्णदुर्ग

भद्रकारी शूरपास ने भासिकान्न को स्वर्णदुर्ग बनाने में डापना आंदोलन योग्यान दिया। वे आंदोलन का चार आधार संभो में से एक हैं। उत्तमसुन्दर दास जहां हैं - "जिस दुर्ग में जीव, जापती, शूर और तुलसी जैसे छुप्रातिष्ठि विद्यी माँ भद्रकारी की दिव्य वाणी उल्लेखनीय अवतःजाती से विजय देवा जे लाई-काने में कूली थी। उसे साहित्य जी समावयतः भासिकान्न जहां है। बिश्वधर्म ही यह हिंदी साहित्य जो स्वर्णदुर्ग था। इस कथन जो भी यह आशय है कि भासिकान्न अपनी धूर्वती तथा प्रवर्ती लाली से श्रेष्ठ हैं।"

(ii) भगुण भासि

संगुण भासि ने उपासक भासि श्रीमाण शूरपास ने अपने साहित्य में भगुण भासि की भेदता प्रतिपादित की गई है। उद्घव गोपी भंडार के माध्यम से दे जहां हैं कि "। गेयुरी र्णन देस जो वासी ?"

(iii) शूरपास का कार्य प्रभाव

आंदोलन के चार प्रमुख कार्य धारा-संतकार्य धारा, धूर्मीलाल्य धारा, रामभासि लाल्य धारा और शूरपासि लाल्य धारा हैं। इसी

यार मुख्य व्यापार में से एक उत्तमान्तर्गत व्यापार परंपरा के प्रतिक्रिया भी अतिविश्वासी महालवि चूरदास है। जो महत्व संतान्य व्यापार में जबीनदास ना चूकी संतान्य में जायसी ना, रामगणी व्यापार में गोदावारी तुलसीदास ना है, वही महत्व उत्तमान्तर्गत व्यापार में महालवि चूरदास ना है।

(iv) व्यापारिक व्यवसाय

चूरदास ने एक प्रादीपिक व्यवसायी को इतना परिपक्व भाई परिष्कृत नर विदा कि वह संपूर्ण हिंदू प्रवेश जी भाषा कर गई। मैलेखर पांडिये महालवि चूरदास जी व्यापारिक के अंतर्गत में लक्ष्य है कि — "चूरदास जाविदों के बीच इमालिं भी हैं कि उन्हींने व्यापारिक कार्य जी जो परंपरा विनियोगी, वह बदल के लगभग 400 लाख रुपये तक चलती है। चूर जी समाज भाई साहित्य से जो व्यापारिक जीली थी उससे 46ले से आविन्द विनाशित, परिष्कृत भी औ आशीर्वाद विनाश उठोने बदल के जाविदों को संपादा"

(v) वात्सल्य वर्णन

जिस सामंती काल में माला शूल्यों ने दाढ़ी वर एवं दिया गया था उस समय में शिशु में लक्ष व्यवस्था की लक्षण मानव जाति के उत्तरवल्ल अविष्ट नी तरफ आ आतिशायी संग्रह है। चूरदास ना वात्सल्य वर्णन इसका आकृति है। चूर मानव जीवन की विलक्षण जी ललता को ललता जिलारियों के माद्यम से भरना पाएते हैं। "सोकित कर जवाहित लिये। धुत्रनिवारन रेतु तन मंडित, भुक्त दधि लेप लिये।" महालवि चूरदास ने अद्भुत, अद्वितीय और अविस्मरणीय वात्सल्य वर्णन के भलीत साहित्य जी खन-खन से जोड़कर इसे अलीत औपीलन के रूप में परिवर्तित कर दिया।

शुल मिलार्क और संगत हैं जो हिंदी साहित्य के सर्वाधुन भवित्वाल के शृणुभक्ति नाथ धारा के प्रतिक्रियि महावि शूरपास हिंदी साहित्य ही नहीं अपितु संखरी भारतीय साहित्य के सिरमार कवि हैं। शूरपास जो योगदान ने केवल साहित्यिक क्षर ५८ वर्ष बाल्क समाजिक और आधिकारिक रूपरूप पर भी है। उन्होंने आनन्द और आनंदका प्रस्तृत श्वरप्रद प्रदान जैसे में अप्रतिभयोगदान दिया। कालांतर में शृणुभक्ति नाथ पर्परा, वात्सल्य और वृजभाषा जो जो प्रतिष्ठा निली और उसमें उक्षित आया, वह शूरपास जैसे महात साधन की भाँधनों जो ही परिणाम था।

शूरपास ने वल्लभाचार्य जी से दीक्षा लीकर गृष्ण की प्रेमलीलाओं एवं बल शृणुओं को भलेह के रंग में रंग कर प्रस्तुत किया। माधुर्यभाव की इब लीलाओं ने खनता जो बहुत रसमधन किया। इस तरह दो शुरूयत सम्प्रदाय संगुण भक्ति के अवतार अपने पूर्व उक्षित पर इस लाल में विघ्नान थे — रामभक्ति शारणः शृणुभक्ति शारण।

आनन्द आनंदकी शुभ विशेषताओं निभन्नतिरित हैं—

आनन्द आनंदके जंतों ने भूति पूजा जो १७७८ वर्ष किया। इसके कुछ जंतों ने हिन्दू-मुस्लिम इन्होंने पर बल दिया। आनन्द आनंदके नेता भव्यसे मार्ग पर बल नहीं देते थे। उनका कहना था कि यदि मानव जो आवार - विवार एवं व्यवहार शुद्ध हो, तो वह शृणुभक्ति जीवन में रहकर भी आनन्द जाए सकता है। संगुण ईश्वर (भगवान) की उपासना। शूरपास निर्गुण। ईश्वर की अपेक्षा संगुण ईश्वर को भवत्व देते हैं। अर्थात्, उनकी भक्ति में संगुण हो गया है।

(v) सांस्कृतिक समवय का शुरूपात्

चूकी काव्यशास्त्र के गवि मालिक भीहड़गढ़ जायसी का दृष्टिगोला समवयवादी था। ३८६ने पद्मावत में पारंपारिक इस्लाम के दार्शनिकों में भारतीय वेदांत की मान्यताओं तथा प्रेम तत्त्व का समीक्षण कर सांस्कृतिक समवय का शुरूपात् किया।

(vi) प्रकृति का अद्वात्मक परिचय

जायसी ने अपने 'सिद्धांतों' का प्रयार करते हेतु हिंदू समाज में प्रवलित लोक कथाओं को अपने काव्यों का आधार बनाया। ३८६ने एक प्रवलित लोककथा और ऐतिहासिक कथा के तर्ण-वारे से पद्मावत का अध्यापन बुला है। इसमें ऐतिहास कम है लोककथा ज्यादा।

(vii) विश्व का अतिश्चोक्तिपूर्वी वर्णन

जायसी रचित पद्मावत महाकाव्य में योई बहुत मात्रा में ही उही विश्व की अभिव्याकृति अतिश्चोक्तिपूर्वी के अद्वात्मक रूपों में हुई है।

(viii) ऋद्धव्यवाद

जायसी का प्रेम अमृत ईश्वर के प्रति होने के लाल १६५-प्राची द्वी ग्रन्थ। यह १६५-व्यवाद अद्वितीय भावुकता, प्रेम और सम्मता से धुम्जत है। इसनी प्रत्यक्ष ध्याप पद्मावत में दृष्टिगोकर्ण होती है।

२. शिल्पगत विष्णोधारण

एक और जहाँ संवेदनों के इतर पर जायसी अपनी प्राचीन जात्यरिति पद्मावत में मान्यताओं और भावनाओं को प्रतिपादित करते हैं तो द्वितीय और सद्य, सर्व भाषा गोली और भूक्त व स्टीक अंलकार, विंव, धंद और प्रतीकों के माध्यम से जनसाध्यारण से जुड़ने का अनल प्रयास करते हैं। जायसी की भूमध्य काव्यकृति पद्मावत लोक जीवन से सम्बद्ध होकर ही उभारि समक्ष प्रस्तुत होता है।

मालिक भोद्धभद्र जायसी भारतीयाल के अकेले कवि हैं; जिन्होंनी नजर में कवि हीला अर्थात् भद्रवपुर्वी है। जायसी लिखते भी हैं— "भोद्धभद्र कवि यह जोहि चुलावा। चुला सो पीर प्रेम कर पावा।"

(i) प्रश्न — जायसी रचित पद्मावत की शीर्षगत विशेषताएँ इस प्रकार हैं—
इसमें भारतीय कहानियों के गजेश्वर में चुकी लिखाई को कुछालता से सार्वभौमिकरण कर प्रस्तुत किया गया है।

(ii) ठेठ अवधी काव्यभाषा— पद्मावत की भाषा ठेठ अवधी है। भाषा मुद्दावरेवार है। इसमें अरबी, कारसी, उर्दू, ओजपुरी आदि लोकसभा के वर्णों का बहुतायत प्रयोग किया गया है।

(iii) अंलकारों का समुपित प्रयोग— जायसी ने अपने काव्यों में अंलकारों के प्रयोग में छोटे उदाहरण से जास लिया है। १९४०-१९५०, थुक्का, प्राकृति-प्रियण, तथा आहृष्टाल्लिक तत्वों की ऐस्थ-थापता में अंलकारों का सहीक व सार्वक प्रयोग परिष्कृत होता है। पद्मावत में उपर्या, २९५०, उत्त्रेक्षा, आतिश्यालिम, अमासोलिम, अन्योलिम आदि अंलकारों का प्रयोग हुआ है।

(iv) अंलकारों का समुपित प्रयोग— जायसी ने पद्मावत में विवरण का सहीक प्रयोग किया। पाल्ल के अधक इनके अन्तर्गत विवरण मूर्ति हो जाते हैं।

"माध्ये कलक गागरी आवहि २९५ अवृप्।
जेहि के अस पनिदारी सो ३१नी केहि २९५ ?"

शास्त्री आंदोलन में भूर के भृत्यों ना विश्वेषण नीजिए।
 वस्तुतः धर्म के भीतर ईश्वर था आधैलिक सत्ता के लाये संबंध
 अपापित जनों के बारे प्रमुख पवित्रियाँ मानी गई हैं — ब्राह्म,
 कर्त्ता, योग तथा भगवान्। इन सभी भगवान् भवित्व शुलभ और
 प्राप्तिक है लालित यह शुद्धि, शरीर था लियाओ तर आवारित
 न होगा मनुष्य नी आवताओ तर आवारित है। यही जाण है
 कि लोक जीवन में जब धर्म ने आंदोलन का एक लिया तो उसमें
 माध्यम भगवान् ही बनी बन गए था वही।

हिंदी साहित्य की गर्व से विलास भवित्वाले हिंदी साहित्य
 जा ही नहीं १२वीं भारतीय साहित्य जी सर्वोपरि उपलब्ध है।
 यह लोकभाषण तथा लोकभगवान् जा नहीं है, जन्मा के दृष्टि जी
 वाली है। इस जाल के लावियों ने भगवान् आंदोलन के माध्यम
 औ सभापति में लोक आनंदीतना जा संपार लिया तथा उल्लग जात्य
 के माध्यम से सभाज जो नपी देखा दी। भद्रावि और भगव
 श्रीरामानी भूरदास भवित्वाले के इन प्रमुख जनि हैं। उन्हाँने प्रेम,
 प्रात्यक्ष्य और भगवान् जी ज्ञानी निर्विनी वहाँी, जिससे मंडूर साहित्य
 घोट भरवाई हो गया। उनकी भवित्वा जो परिवासित जरूर है। उ
 रोमपद्म शुल्क जी गढ़ है — "भूर्यास वरस्तव में हिंदी साहित्याकाश
 के जागतिक्यमान सूर्य है। भूर की स्पना शैली इनी प्रगल्भ और
 कार्यान्वयी है कि आजे होने वाले लावियों की जृंगार और
 प्रात्यक्ष्य की अक्षियाँ भूर की खुठल जान पहुंची हैं। भूरदास ने
 आलित्यक संकल्पनाओं के माध्यम से भगवान् आंदोलन को
 भावार्ण खगता के भवित्वे पहुंचाने जो सार्वत्र वे समर्पित
 प्रयास किया। भगवें पांडे ने "भगवान् आंदोलन और भूरदास
 का जात्य" नामक पुस्तक में कृष्णकथा की पंसरा जा विस्तृत
 विवेपन करते हुए विशेष विकाला हैं।

④ "मीरा ने अपने काल्य में १७८१वीं विचारों का जाकी विरोध किया है।"
 इस कथन पर सोदाहरण प्रकाश डालिए।
 हिंदी के महत्वशुल्कीन भाष्टि साहित्य में मीराबाई का स्थान विशिष्ट
 है। वे एक शृणु भजत जवाहिरी हैं। मीरा के काल्य में उनके
 व्यक्तित्व की निर्मिता, विडरता और स्वाधीनता की चेतना
 दृष्टिगोचर होती है। उनकी विद्वाई व्यक्तित्व पर प्रभाव डालते हुए
 विद्वानिवास जिस लिखते हैं— "मीरा सामंतवादी १७८१वों को तोड़ने
 के लिए प्रसिद्ध भाष्टि का अंगूष्ठ लेकर विवास के आदर लिए
 आई है, उज ध्वार से ध्वार से विवाल खलआंदीजन में वहुत
 कड़ा जोखिम डाकर झुट पड़ी है।"

बदलते परम्परा के प्रतिभानों में महायाल की जावेही अपनी
 लोकप्रियता में बेमिसाल है। मीराबाई अपनी भावनावर्थी और जाती
 दोनों शेरे परम्परावादी व्यक्तियों की जड़ता, चोपी गई मध्यवादी और
 जाति-पांति की जड़ाइबद्दी को तोड़ती है। सामंती आजीजाल्य
 को ठीकर मारकर विद्वत्वनों का सत्संग करती है और खलसाधारण
 के बीच-बेचौक विवरण करती है। मीरा जी असाधारण लोकप्रियता
 का १८५८ खलसाधारण से तादामय रूप है। खलसामाल्य मीरा के
 गीतों में अपनी भावनाओं की आव्यो-सत्यी आनित्यानी पाताहै।

मीरा के काल्य में १७८१वीं विचारों का क्रीय

मीरा का काल्य स्त्री मालास की पीड़ा को शब्द देता है। मीराबाई
 के थुग में स्त्री आत्माभित्यानी के लिए स्वतंत्र नहीं थी। स्त्री
 के धुर्ख-धुर्ख, अपने-आकांक्षाएँ, वर्तमान-भविष्य उसके अपने
 भीतर निहित नहीं थे, बल्कि सभाज द्वारा प्रव्यारोपित थिए जाते थे।
 मीरा आरतीय सभाज में स्त्रियों को परावील कानून वाली विचारव्यापा,
 व्यवस्था और विद्यो-विद्यानों का अतिक्रमण कर अपनी शर्ती पर

जीवनयापन करती है।" राणा जी भोई बदलामी लाजे छिठी। नोई निंदा, कोई विदें, मैं चल्युंगी जीवनयापन वाले अदृष्टी।" नीरा जी आमित्यज्ञी पृष्ठि जी प्रायः एक सामाज्य वित्त, प्रियते स्त्री जी ऐ नीरा ने अपने कात्य और आपरण के द्वारा पारम्परिक सामाजिक दृष्टि और सामर्थी मुख्यों को जबदस्त चुनाती दी।

"तरी कोई न रोगवधार, भगव दुर्ग नीरा चली।
बाप-सरभ कुल जी भवदा एवं सौ दुर जरी।"

शीराहर्ड धंजी संत स्त्री ने बारी चेताव व मुझे ऊ खिल बजार भाज मे शान्ति वानीव का परिचय दिया। शीराहर्ड के बारे मे भेजेहर पाँडे कहते हैं - "नीरा की गविता मैं सामंती समाज और सम्मति की जकड़न से बंधन स्वर के मुख्य आधिकार लिली है, उनकी सत्त्वता की आकृक्षा जितली अद्याधिक है, उनके ही सामाजिक भी।"

ललते परम्परा के प्रतिभालों मे महायकाल की जवाहरी नीरा अपनी लोकप्रथित मे वेशिसाल है। इनका भृत्य उस विश्रीही चेताव की आमित्यज्ञी मे है जो उस समय सामरतवाद के विरुद्ध पालप १८ है। नीरा नकालीन परम्परावादी, भवतवी व्यवस्था की जड़ता, धोधी कुल भवदा और जाति-पाति की जकड़दी को तोड़ते हुए कहती है। ऐसे तो निरधर गोपाल, इस्सो न कोई, तो एक के स्वीकार मे धूरी व्यवस्था के लिखेव का शानिकारी दर्शन द्वारा दिखाई देता है। नीरा अपने भगवानीन भक्त ज्ञान संतो से अलग है, दृक्षासाल नीरा ने अपनी जांगिकाता के दर्शन और राधा के प्रतिरोध के लिए आकृति ला एक स्वामी रूप गढ़ा है। संत जवाहर से जीवन नीरा के लाभ मे उसका ध्याक्तिक जीवन लकुत मुख्य है। उनकी जावेता मे जिजी जीवन, संघर्ष, अकेलापन, असुरक्षा और यातना आदि लर-लार आते हैं।

"माई आंदरे रंग राती,

साज क्षिंगार लाल पर धुंधर लोकलाज तज नाची।"

मन्याथ से प्रथेक सर पर खुशबू गली भीरा जी प्रवरता छुत
भर्यादि थी। उनके व्याप्रित जा भयभ-विम असाधारण था
इसे अन्याथ विरोध की व्यार और तीरनी होती गई। जीरा
सफालतापूर्वक साम्प्रदायिक सीमाओं जा आतिशय करती है। उनकी
विद्रोही घेतला किसी बाँधे में नहीं बैठती। भास्ति के भारी में भीरा
गुल भर्यादा और आमिभाग जो लोड ली तरह चीरकर प्रेम जी
बिर्जल गंगा बहती है जिसमें पुरी जातीय आस्तीता सराबोर हो
जाती है। जीरा के लाई में इह सकते हैं — "लैंगिक संवेदन शीलता जा
प्रसार भीरा का स्वप्न है और आज की जी नी संकल्प।"
जीराभाई के जात्य में भास्ति आंदोलन जी प्रगतिशील घेतला अपनी
समग्रता में उद्धारित हुआ है। इसमें वर्ष व्यवस्था और लाई परावीता
जा भर्क्षण करने लाले वर्ष शास्त्र और सामाजिक विद्या-विद्याओं
के विरोध का स्वर गुंजायमात है।

निष्कर्षित है कि अपनी सामाजिक आस्तीता जो
व्यार एवं व्याप्रित आस्तीता को आधार बनाकर यदि किसी
अफत ने अफत २१८ में विशेष रूपाति प्राप्त जी है तो वह भनत
कवापिनी भीरा है। जीराभाई के जात्य में भास्ति, विहृष्ट विद्रोह
का अधिकृत संगम देखने को लिभा है। जीरा जा विद्रोह विज्ञात्रिविज्ञ
कथन में स्पष्ट २०८ से परिभ्रष्ट होता है — "पर धुंधर वर्ष जीरा
नाची है। अंते अपने नारभाग जी आपाहि हो गई दासी है, लोग
कहं भीरा अहि बापरी, व्यात कहं कुलनारी है।" जीरा ने अपने
जात्य में रुद्रिवादी विचारों का काफी विरोध किया है। जीराभाई
जा भूखी जीवन वेदना और पीड़ा जा इतिहास १६८ है, पर इसी इतिहास
से उद्धारे अपने असाधारण व्याप्रित और इन्हिं ना निर्मित ३८, हिंदी

आकृति चाहिए में त्रिविलय अप्यानं प्राप्त लिखा। परमल द्युतः शशिषारि
प्रधानपुरुष के अस्थायिक शुभाभिष्ठि, राज्ञीरुद् शाखा राज्ञी विधा दी के कुरा
राज्ञी कुरा दी की प्रती लगा राजनीहृदय दी नी कुरा वी। १८३० अप्रै
राज्ञी गोप में विं. २८ में आसपास दुखा था। शिशलहृद ला थी
कुरा गोपन के अति स्वप्नत से ही अविष्ट भ्रेत था। लिखी शाहू
में विश्वराजल की शक्ति कुरा भूल्य भूल्य होइ ५५८ अप्त द्युतः

प्रधान ५५ में शिश ने अपनी पाइ ६२ले लो विली ६५८ प्राप्त
की ६५८ किंविर। ६५८ अपने द्विष्ठी ली लोग १२८ वी १८०८अप्रै
लो १८०९अप्रैल्य लगा कुरा के कुरा में उद्यामा था तथा अजात अलाद
की १९३१ लोक के लिक ही कुरा द्विष्ठी शिशलर लिपा था। कुरा
१९३१ कुरा की सांस्कारिक चंतारा से कुकित दिलाते हुए अपने १९०८
में ५५८ लिपिग। मालाता के किं अश द्युत की एक
६५८ वी। ६५८ कुरा दिलों १९८ शर्का की अक्षिली दी। वे अत दी अर
प्रावाल शिक्षण से ५५८ कारती वी। गोप से विवाह दीठे का बाद
की उलां लगाव अशिला के प्रति लाल त कुरा शार १८३० थे
लिलते की लोक में ही ३००८ते भाग १८०८ द्युत में तरी गोपी
ते गोपा के राज में ५०८ लिपा।

शिश हें १९०८ की ६५८ - अप्यर्थी ला १०८त कारते हुए लग है कि
कुलके लिय पर मोर के पंथो ला अमुट है, ते १०८े ११८े ११८े
११८८ अर गोले में कुलकी कुलो ली माला ५८ी है, ते गंस्तु
बुजाते हुए ११८८-११८८ है अमुट द्युत अमुट द्युत है उम्मी लिकाँ
उलके गोले में अंतिमित वी। लिपो ३०८ते "अर्य" लिपिमे के
मार्गमें लो लुलचार दुलोती दी और लानस्ताल और गुजारा त
में अलात के लीय लोकप्रिय दो गई। ३०८८ते हुलिया की ५१८८
में गोप लोके का लगा लिखाम।

① तुलसीदास ने 'कवितावली' में सभकालीन समाज का वर्णन किस रूप में किया है?

भाक्तिगाल कवियों में अग्रगांठ गोस्वामी तुलसीदास मारतीय समाज और संस्कृति के बहुत एक और उत्त्रायक हैं पहली दूसरी और सुधारक भी हैं। तकालीन समाज में व्याप्त विसंगतियाँ, 'कुरीतियों', 'कैंप-नीच', धुँआकूत जाति-पाति के अवभाव जो दूर करके तुलसीदास ने एक स्वरूप समाज की स्थापना की। डॉ. राखपत दीक्षित ने लिखा है कि - "तुलसीदास का सारा प्रभास खलता खबादिन के मानस परिष्कार के लिए था। वह जिस समाज खलदिन के मानस परिष्कार के लिए था। वह विश्व समाज की कल्पना करके चले, वह स्वार्थ-स्वाग और बलिदान सिरबाने पाला था।"

गोस्वामी तुलसीदास जी ने धीरे ही - व्यवस्था एवं सामाजिक मूल्यों को स्थापित करने का प्रभास किया है। समकालीन के माध्यम से घटनाओं के आलोक में पारिवारिक, सामाजिक आदर्शों को उन्होंने जो 'उद्देश्य' व्याख्यायित करने की कोशिश की है। तुलसीदास ने स्वन के मूल में लोकभंगाल है, जिसे वे जात्य जा उद्धृत मानते हैं। इसी आलोक में उनकी सामाजिक व्यवस्था निर्मित होती है। उन्होंने तुलसी जा साहित्य रमात्मी-भावना जागृत करता है वही सामाजिक चेतना जा भी प्रसार करता है। मारतीय सामाजिक एवं राष्ट्रीयिक क्षेत्र के दीर्घिकालीन अंतर्भुत और विधृत की प्रत्येक प्रतिधारा उस धुग के महान साहित्यज्ञ और भजन शिरोमानी गोस्वामी तुलसीदास जी कृतियों में दृष्टिगोपक होती है।

तुलसीदास ने 'कवितावली' में सभकालीन समाज का वर्णन

भाक्तिगाल में लिखी रखनाकार के कृतिल में सभकालीन समाज के अपार्थ जा रहना विशुद्ध और दक्ष ध्येय नहीं मिलता पितना

गोस्वामी तुलसीदास के साहित्य में प्राप्त हीत है। कवितापली में गोस्वामी तुलसीदास जो लहरे हैं कि जाल बड़ा कराल है, राखा विद्युती है और राखसमाज धर्मी नपटी है। "जालु जाल, शृणुल शृणु त, राखसमाजु बड़ी धर्मी है।"

गोस्वामी तुलसीदास रचित कवितापली में समकालीन सांघर्षी सामाजिक अपराध का व्यूपर्युष प्रितण छुआ है। प्रथा को भाविताविहित बनाने वाले राखसमाज को जाल लाइल इन्हें गोस्वामी जी ने अपना थोक प्राप्त किया है। कवितापली में समकालीन सुरक्षा के प्रति तुलसीदास जी ने विशेष जो व्यूपर्युषता है। वे खलता नी व्यथा से व्याधित होने लहरे हैं— "दरित दसानन दवाई देत दुली दीनबंदु। दुरित दृद्ध देखि तुलसी धारा करी॥"

कवितापली में समकालीन सांघर्षी समाज के प्रति तुलसीदास जी ने दृष्टिकोण आलोचनात्मक है। समाज में व्याप्त असमानता, दरित्रिता, गरीबी आदि से के कुश्ची हैं और इसीलिए वे जो बर-बर अपने आराध्य ऋषिराम से इन दुर्घ-र्दि जो दूर ज्ञान की प्राप्ति लेते हैं।

तुलसीदास जी सामाजिक चेतना का महत्व उनकी सामाजिक जीवनप्रियता के रूप में दिखाई देती है। उनकी सामाजिक चेतना को इसी अत्यधि, जो व्यक्तिगत संबंधों से शुरू होने परिवारिक ऐसे सामाजिक संबंधों तक और जिस आपकी राज्य तक पहुंचती है। "पर हित सारस धर्म जहि आई। पर पाण्डु सम नाहि अध्यभाई॥" जो जीवन का सार मानने वाले गोस्वामी तुलसीदास का साहित्य लीलामंगल, समाज और विज्ञानशुल्क की भावना पर ही केव्वित है। तुलसीदास जी की सामाजिक चेतना आपके जीवन, आदिश समाज और जीवनमांडि की वृत्तियाँ पर रखता है।

गोस्वामी तुलसीदास जी ने अद्यै १८ और शम्भवितमार्ग के माध्यम से
जन सभूत सभाज जा रवाणा तैयार किया है। उनकी रामराज्य की आवधारणा
आदर्श सभाज की संतुष्टि जो परिलक्षित जाती है। वे कहते हैं— “देहिक,
दैविक, जैतिक तपा। राम राज्य जाहूहि नहि आपा॥” वही दूसरी और उनकी
जीवितावली में तरकालीन सभाज का अधिक रूप प्रस्तुत होता है। उन्होंने
धर्मभावसे के दुर्ब - दर्द और सभाज की अवीर्य पश्चाला वर्णन इस प्रकार
किया है—

“खेती न किसान को, किरवारी जो न भीरव, बलि,
घनिक जो उडिये, न चाकर जो चाकर।
जापिका लिहिन लोग जीधार ओप रह,
कहौं एक छान जो कहाँ खाई, जो जरी?॥”

सभग्रह क्ष्य में जह जाते हैं कि हिंदी भाषाहिय के सर्वोच्च गवि और भास्त
श्रीरामगी गोस्वामी तुलसीदास जी के कृतिय में तरकालीन सभाज का अधारि
और जीवन्त वित्तन परिलक्षित होता है। यहाँ जन और तुलसीदास जी
का साहिय भाजी-भावना जाहूत लगता है। गोस्वामी तुलसीदास जी कुष्माण्डु रूपि
प्रेतगो का भी प्रसार करता है। गोस्वामी तुलसीदास जी कुष्माण्डु रूपि
जीवितावली में साभाजित और लोकवादी द्वारा महामाल की रिक्षा
साधना लगते हैं। इसलिए आवार्य शम्भव शुल्क वे गोस्वामी तुलसीदास
जी को लोकमाल की आधनापस्था का गवि करते हैं। डॉ. शम्भविलास शर्मा
तथा डॉ. किरणनाथ त्रिपाठी ने अपनी कुष्माण्डु पुस्तक में भी तुलसीदास जी
की साभाजित पक्ष की महला की प्रतिस्थापित किया है।

इस जीवितावली में श्री रामकृष्ण के इतिहास जो गठित जिमता है।
इसमें कुल सात गांड हैं— बल गांड, अयोध्या गांड, अरण्य गांड,
किष्मित्या गांड, सुदूर गांड, लोग गांड और गांड

भालेला ल मे किसी रूचनामार के शुद्धिवत मे तकनीक यथि जा
जाना प्रधुष और बाकण चित्र गही निलंग, निलंग तुलसी के साहित्य मे
छात दीता है। कवितापनी मे तुलसीपाल गहत है लाल बड़ा लाल
है, राखा त्रिदिव है और राज भाराज भली-जपटी है - कालु फराल,
बृपाल बृपाल न, राजसभाजु बड़े छली हैं जीवन की विभविका संखी
यथार्थ जो एक दुःखाल के रूप मे तकनील लाल-झुमी है। दिनों दिन
परिष्ठिता तुल्याल, तुरव, पाप और कुरुज्ञव दूते दीते जा रहे हैं। इस भयानक
वास्तविकता से अर्थ खाल चुरव और चुरुचुर संकुचित है रहे हैं।
इस अभाव की लकालता दीती है कि कहे-कहे पापी इराते - अभावी
की लालत के लल पर लंबे ल्याते हैं: और जो भी माँगते हैं, आभावी
से पा जाते हैं। पर अले आदती जा बुश दी जाता है —

दिन-दिन दूनो देखि बारिदु, दुकालु, दुर्दु,
दुरिदु, दुराजु चुरव-चुरुत स्कोप है।
आजों पैत पापत घवरि पातकी प्रवर्द,
काजकी लकालता, अलेको होत पोच है॥

दिनों दिन परिष्ठिता, अलाल, तुरव, पाप, राज्य विष्वर दूते जा रहे हैं,
जिससे चुरव और पुर्ण दूते जा रहे हैं। अभय-प्रेसा विपरित द्वे ग्राम
हैं कि कहे-से-कहे पापी जो शर्दूल वफ्तु निल जाती है और अले
का बुरा दीता है। तुलसीपाल गहत है कि मेरा इकमात्र अधार सभार,
और सब संकली से धुड़ते वाले सीतापति रामपद्मजी का ही है
जोक दृष्टे का अधार केवल माता ही है है रुपालु रामपद्मजी,
नई हिन्दूत की प्रशस्ता तो कीजिए, क्योंकि मुझे आपके नाम के अरोग्य
परिवार की दुर्द भी चिंता रही है अपने युग के यथार्थ और प्रियमय
संसार के भाक्षात् गवाह दोनों के नाते भक्त गवि तुलसीपाल का
गहना है इस संसार का संकट भिटेगा तो नेशे भिटेगा। तप ते
गठित है, और तीर्थित गरके अनेक स्थानों मे विपरते से भी है।

① किंवद्दिवित वर रियली लिस्टिंगः—

(क) अवैर के प्रका

अवैर की विद्युत आविष्यक के उपचारिक के अन्तर्गत के लियुन अल्पि के अन्तर्गत व्यापक के चुना मध्यम भूत और महाकाश हैं। इस काल जो व्यापक की अवैरिक अवैरिक अवैरिक अवैरिक उनके ही साहित्य में अवैरिक छुट्टी है। अवैरिक वा द्वितीय किसी एक पर, परंपरा और अवैरित वर आवाहित न होना वह उन अवैरी भूत, साधक सभाजित, अवैरिक और व्यापक आव्याप्तियों अवैरिक है। उन्होंने विनियन फॉन अवैरियों से पर्याप्त मात्रा में चुना वा उनके पास लोई विषयित और उन व्यापक विद्युत वही वा। उन्होंने विनियन स्वेतों से विचारों लो द्वितीय किया। उन वर आवैरिक औपरिधिक पिंडन, डॉकर के अद्वैतवाद, अपौष्टियों की घोण-भावना, जूफियों वा इत्यादि व १००वाँ की जीवन-इति वा मध्य वा। श्रेष्ठ, आव्याप्ति, अवैरिक अवैरित, भूमा, भौक आदि विभिन्न विद्युतों के परिप्रेक्ष्य में उनके व्यवहार का विवेचन किया जा सकता है—“जीव उन अवैरों विद्युति है। वह नीज शृंखल विचारः”

शृंखल के अवैर में अवैर की दृष्टि भूलतः अद्वैतवादी है, जिसके अवैरार शृंखल के हैं और वही भूत है। युक्ति शृंखल अवैर में अपने को ब्रह्म करता है। अवैरित वह अवैर जैव द्वितीय वा किसी एक जैवा वही आवाहित न होना वह उन अवैरी भूत, सहज व आपक सभाजित, संस्कृतिक और व्यापक आव्याप्तियों अवैरिक है। उन्होंने विनियन शृंखल लियुन है। यह अवैरारवादी विद्युतों पर आवाहित संग्रह ईश्वर नहीं है। अवैर जैव वा अवैरिक के व्यवहार में द्वितीय के अद्वैतवाद से अलग हो जाता है। द्वितीय के नाम के अवैर वर प्रेम वा भूति जो महत्व देते हैं। “२६नम् देस किमा है। यह अवैर अवैर नी पुनिर्भाग दृष्टि व्यापक विद्युत जिया जाता है। यह अवैरिक औपरिधिक पिंडन, डॉकर ले अद्वैतवाद, अपौष्टियों नी घोण-भावना, जूफियों वा इत्यादि व त्रिमाणों नी जीवन-दृष्टि वा

उन पर मारतीय औपानिषदिक प्रित्ति, शक्ति के अद्वैतवाद, वाच्यापितों की रोग-आधारा, भूमियों का १६५वां व वृ३०वां ली जीवन - दृष्टि एवं प्रभाव पड़ा। ब्रह्म, आत्मा, शशीर जगत्, माया, मोक्ष, आदि विभिन्न शिष्यातों के परिप्रेक्ष्य में उनके वर्णन वा विवेचन किया जा सकता है—
“जीव तुम आध्या गति है”।

ब्रह्म के सर्वों में जीव की दृष्टि मुलतः अद्वैतवादी है, जिसके अनुसार ब्रह्म एक ही और वही अत् है। इसकी ब्रह्म सब में अपने को प्राप्त करता है। इसलिए वह अब जैसा ही किसी एक जैसा नहीं है। इसके जीवर कुछ ऐसे ही अलिखण्ड जरूर हैं। लहौ जीवर ही पैदा। जहाँ जैसा, तहाँ तैसा। जीवर के अक्षरवर्षाद पर शान्तिवार्थ वा प्रभाव आधिक स्पृह नहीं से दृष्टिगोपर होता है।

जीवर का ब्रह्म कियुँ है। यह अवतारवादी शिष्यातों पर आवाहित संपुण देखते ही है। जीवर ब्रह्म की उपलब्धि के अंतर्भूत में जीवर के अद्वैतवाद से अलग ही जाते हैं। वे जात के स्थान पर ब्रह्म या भास्त्रि जी महिते देते हैं। “रहना नहीं देश किसाना है। यह संसार कागद जी पुलिस छुट्ठ पड़े धुली जाना है।” जीवर ने अद्वैतवादी के शिष्यां की स्वीकार जरूर कुछ तो ब्रह्म और आत्मा नहीं है। आत्मा तथा पूर्माणिक भ्राता है। जीव यह माया का आपरण हीने के लाला ऐसे ब्रह्म में अंतर प्रतीत होता है। जान दीने पर वह माया के आपरण से मुक्त ही जाता है। जीवरास मातृता है जिसे आत्मा मुलतः ब्रह्म से अलग नहीं है—

“बल में कुंभ, कुंभ में जल है, जल-जीतर पानी।
कुल कुंभ जल जलहि समाना, इहै तथ जहै तियाती॥”

तुलसी साहित्य के मरम्मपश्ची प्रसंग

गोस्वामी तुलसीदास राम भक्ति नायनाभा के प्रतिबिधि कवि थे जो उनके अपने शास्त्राधि हिंदी के सर्वश्रेष्ठ कवि हैं। उनके साहित्य में जीवन और अणार की समस्त परिस्थितियों और प्रवृत्तियों का जीवन प्रियों उपस्थित हुआ है। उनका साहित्य मानवीय संवेदनाओं और मानवाङ्कों की मरम्मत व सहज अनियन्त्रित है।

गोस्वामी की कवि भाषीकृत रामचन्द्रार्थ संवेदना और एकान्त भगवद्-भाषी से निर्मित हुआ है। वे मानव जीवन की प्रायः विर्लित हुआ हैं। वे मानव-जीवन की प्रायः विर्लित हुआ हैं। वे मानव-जीवन की प्रायः प्रथेक प्रसंग से तावाभेद स्पापित रूप से प्रथेक प्रसंग से तावाभेद स्पापित कर काव्य के चुनौती रूप से उद्घाटन ग्रन्ते अपने काव्य में चुनौती रूप से करने अपने काव्य में चुनौती रूप से ग्रन्ते में अकल ही सके। आश्चर्यी कवि वही कहा जा सकता है, जो मरम्मपश्ची स्थलों को प्रदान कर उनका मरम्मपश्ची प्रियों करना अपना मुख्य कर उनका मरम्मपश्ची प्रियों ग्रन्ता अपना मुख्य कर उनका मरम्मपश्ची प्रियों ग्रन्ता अपना मुख्य व्येष समझे। उप्राणिद्वय समाजिक आचार्य रामपद्म शुक्ल कहते हैं कि “प्रबन्धकार कवि की आकृता शुक्ल कहते हैं कि अवस्थे आधिक प्रता यदि देखने से चल सकता है कि वह किसी आठवाँ के आधिक गरम्मपश्ची स्थलों को प्रदान सका है या नहीं। गरम्मपश्ची स्थलों को प्रदान सका है या नहीं। रामलाला के जीतर ये स्थल अत्यन्त मरम्मपश्ची हैं — राम का अयोध्या व्याज और पाणी के रूप में वनवान्त; प्रियकृट में राम और भारत का लिलन शब्दी जा आतिथ्य; भक्ति और शाली लगाने पर राम जा विलाप; भारत की प्रतीक्षा। इन स्थलों को गोस्वामजी ही अपनी नई प्रदाना है, उनका उद्देश्य आधिक प्रस्तुत और विवाद पर्वत किया है।

गोमांसिली तुलसीदास दाश परिवर्त शास्त्रिय के ७१ वर्ष अवधिकार के अंत में जा आए हों पुस्त गहरी । करती, १९८८ तकला अस्याप्रिक, सामाजिक एवं
प्रयोगाधारक रूप से अग्रिमील जी करती है।

इसमें अंगादी गवर्णर नारङ तुलसा अग्रिमी नियम करती अपना बुजुर्ग
द्वयोग अभिक्षेप सुरियमहु अवधारी वर्षान्तं शुक्ल तात्रे में खुल्हा
२१८ में अष्टमांशो करते हों भावात् हों एको । कालजयी तात्रे पहिं तात्रा या
सकला है, जो अग्रिमी अलों को पृथ्वील कर उठला अग्रिमी १७१०।

तुलसा अंगादी तुलसा द्वयोग अभिक्षेप

गोमांसिली तुलसीदास दाश रमेश चाहिये क्रमस अग्रिमी के अंधेरों
का आवर हों पुस्त गहरी गवर्णर नारङ तुलसा अस्याप्रिक, सामाजिक एवं
अग्राधारक रूप में आग्रिमी ली गवर्णर हों इसके अग्री गवर्णर के अंधेरों
पाठ्यविद्यक, शास्त्राधिक और राष्ट्रीयत्विक गवर्णर के विषयों अंगों के लिए
आग्रिमी व्यापारित किया है। गोमांसिली ली हों राज के राज के राज एं आग्रिमी
व्यापारित में अलों कियों, अस्याधारा, अष्टमांशो १०७ वर्षान्त लोकों के आग्र
मार्ग द्वारा यह लैटिकल की दोनों के आग-सामृ द्वारा वर्ष लैटिकल
की द्वारी एं अग्रिमी है।

प्रसारणालय दाश रमेश चाहिये, हिमो नी अग्रिमी, २५० दोनों के आग्र
मार्ग के विविध प्रयोगों का आलिक, झुक्क और गवर्णर के अंधेरा दोनों
के विविध अंगों का आलिक, झुक्क गवर्णर ६७५४५५५५ है जि ५१८५
विग्रह किया है। यह गवर्णर विविध शुक्ल गद्य है "अग्रेन्त मालप्र विविध
उक्ती मालव आग्री गवर्णर ६७५ ता शास्त्राधिक विष-प्रविष्व आव थे
विषय का रामांशक शास्त्राधिक विष-शात्रिविष आव थे ६७५ ता शास्त्राधिक
विषामाल है। तुलसीदास ली जा शास्त्राधिक विष-शात्रिविष अंतः तात्रा ही